वर्ष 15 अंक 5
27 जनवरी 2018

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति 20.00 रु.

प्रांतीय सम्मेलन विशेषांक

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

भव्य आर्कषक यज्ञशाला एवं श्रद्धालुजन यज्ञ करते हुए

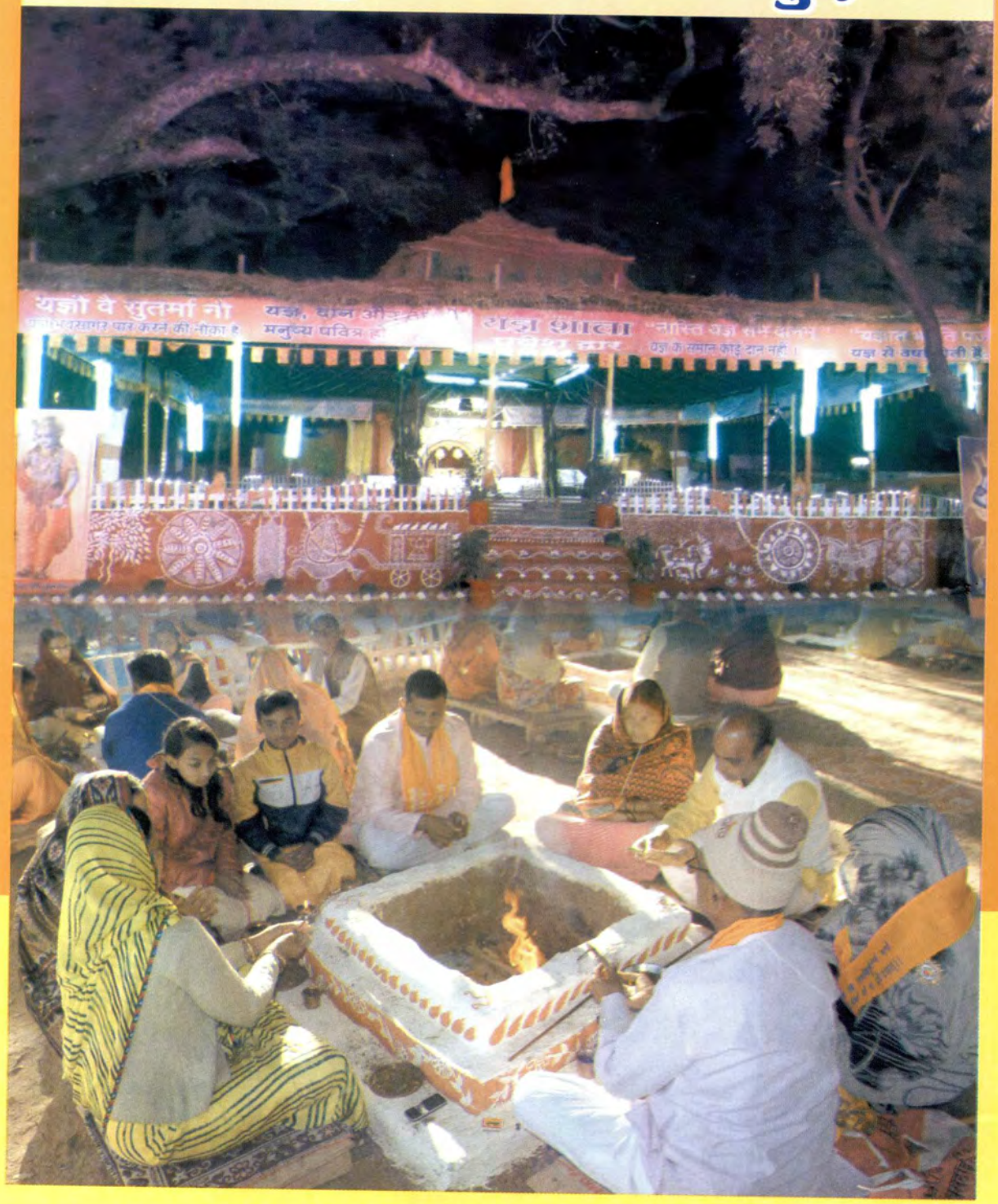

ओ३म्

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 15 अंक–12

27 दिसम्बर 2017

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,118

विक्रम संवत् 2074

दयानन्दाब्द 193

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी

कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन : 07324 226566

सह सम्पादक

मुकेश कुमार यादव

फोन : 9826183095

सदस्यता

एक प्रति – 20–00 रू.

वार्षिक – 200–00 रू.

आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 ..... 500 रू.

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) ..... 400 रू.

आधा पृष्ठ (अन्दर का) ..... 250 रू.

चौथाई पृष्ठ ..... 150 रू.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	
स्वराज शब्द के जनक	6
सनातन धर्म में यज्ञ का कितना महत्व	7
चाल धर्म की नैया की	9
आभार	10
आभार	11
आभार	12
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन	13

फरवरी माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

- स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती 10
- पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि 11
- सरोजनी नायडू जयंती 13
- महाशिवरात्रि, ऋषि दयानन्द बोधोत्सव 14
- शिवाजी जयंती 19
- वीर सावरकर पुण्यतिथि 26
- चन्द्रशेखर आजाद शहीद दिवस 27
- संत रामकृष्ण परमहंस जयंती, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28

सम्पादकीय

धर्म के नाम पर ....

आज समस्त विश्व में चहुंओर हा–हांकार मच रहा है, हिंसा, आगजनी का खुला ताण्डव प्रतिदिन किसी न किसी माध्यम से देखा और सुना जा रहा है। जो लोग इस प्रकार हिंसा को हथियार बनाकर बेगुनाहों का कत्ले आम कर रहे हैं, सम्पत्ति को क्षति पहुंचा रहे हैं, उनकी दृढ़ मान्यता है कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं वह धर्म के नाम पर कर रहे हैं। यह भी सत्य है कि यह पहलीबार नहीं हो रहा है और बहुत पहले से अलग अलग समय में अलग अलग मतों के अनुयायियों के द्वारा किया जाता रहा है। कभी यहूदी, कभी ईसा के अनुयायी, कभी मोहम्मद के अनुयायी इसी प्रकार के घृणित कार्य करते रहे हैं, इसका इतिहास साक्षी है। जब जब इस प्रकार की घटनाएं घटित होती है, सारा देश मातम मनाता है। अन्यायियों के विरूद्ध भर्त्सना करके उन्हें कोसता है। किन्तु कुछ समय के पश्चात फिर इसे भुला देता है। कुछ समय बीत जाने के बाद पुनः इन्हीं कुकृत्यों की पुनर्रावृत्ति होती है, और फिर देश और समाज इन पर आंसु बहाता है। यह क्रम सदियों से चला आ रहा है और आगे भी इसी प्रकार चलता रहेगा। इन दुर्घटनाओं में यदि अन्तर होगा तो संगठनों के अलग अलग नाम का होगा और पीड़ित होने वाले व्यक्तियों व स्थान का होगा। यह विडम्बना ही है कि इस दुःखद और पूरे विश्व को हिला देने वाली क्रूर घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए उसकी स्थायी रोकथाम का कोई प्रयास गंभीरता से समाज के द्वारा नहीं किया गया।

इससे भी दुःखद यह है कि जिन कारणों से इस प्रकार के पाप, अत्याचार, हिंसा को किया जाता है उनके पीछे धार्मिक भावना बतायी जाती है। अलग अलग धर्म और ईश्वर के नाम पर यह सब हो रहा हैं। यह कितना हास्यास्पद है कि जो धर्म मनुष्यता सिखाता है, अहिंसा का सन्देश देता है, किसी का दिल दुःखाना पाप बताता है तथा जो व्यवहार अपने को अच्छा लगता है वैसा दूसरों के प्रति करने का पाठ पढाता है। **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** का पाठ पढ़ाता है उस धर्म के नाम पर यह सब किया जा रहा है और धर्म को बदनाम कर रहे हैं। ईश्वर, अल्लाह, गॉड, सांई के नाम पर परमात्मा को बांटने वाले उस परमात्मा के नाम पर जो दयालु है, सबका रक्षक है, पालक है, संसार की व्यवस्था करता है, उसके नाम पर जघन्य अपराधों को परिणाम दे रहे हैं और ईश्वर की आज्ञा के विरूद्ध कार्य करके उसको बदनाम कर रहे हैं। ऐसे लोगों को ही देखकर ईश्वर के और धर्म के प्रति लोगों में आस्था समाप्त हो जाती है और वे नास्तिक हो जाते हैं। इसीलिए किसी शायर ने ऐसे अमानुषिक काम करने वाले भक्तों को देखकर लिखा –

खुदा के बन्दों को देख खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया।
जिस खुदा के ऐसे बन्दे हों, वह कोई अच्छा खुदा नहीं।।

इस प्रकार का अमानुषीय क्रम तब तक चलता रहेगा, जब तक धर्म के सही मर्म को समाज नहीं समझेगा। आज जो भी समस्याएं, अलगाव, आगजनी, हिंसा और धर्मान्तरण जैसे कार्य चल रहे हैं, उन सबके पीछे धर्म नहीं है उन सबके पीछे सम्प्रदाय है, मजहब है। ऐसी मजहबी विचारधारा अपना आधिपत्य संख्या बाहुल्यता या हिंसा के आधार पर पूरी दुनिया पर करना चाहते है और इसलिए एक दहशत समाज में फैलाकर उसे अपना अस्तित्व स्वीकार करवाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज दुनिया में जितना सम्प्रदायों का प्रचार है और उनकी तुलना में धर्म का प्रचार नगण्य सा है। सम्प्रदाय और धर्म दोनों के उद्देश्य अलग–अलग हैं। सम्प्रदाय किसी भी प्रकार से संख्या बढ़ाने में विश्वास रखता है, वहीं धर्म का उद्देश्य अच्छे व्यक्तियों का निर्माण करना है। सम्प्रदाय कुछ व्यक्तियों तक सीमित है और उनके ही हितों को वह महत्व देता हैं किन्तु धर्म में कोई जाति, सम्प्रदाय या छोटे बड़े का भेदभाव नहीं है वह सबके लिए होता है। सम्प्रदाय मानवीय विचारों पर आधारित है और धर्म ईश्वरीय ज्ञान का परिणाम है। जब तक सम्प्रदाय और धर्म को एक समझा जाएगा तब तक समाज धोखे में रहेगा और अधार्मिक कृत्यों को भी धर्म के नाम पर करता रहेगा, सहता रहेगा। वर्तमान में चाहे धर्म के आधार पर बने हुए मुल्कों की समस्याएं हों, जिसे उन्होंने दो देशों का विवाद बनाकर रख लिया है। चाहे धर्म के नाम पर समाज को बांटने का कार्य कर रहे हों, यह सब व्यक्ति समाज देश और विश्व के लिए घातक है। उसी का उदाहरण बम्बई, अमेरिका या पेरिस में हुए हमले है, जिनके लिए एक ही साम्प्रदायिक विचारधारा का चेहरा सामने आया है।

इसलिए मानव रक्षा और संस्कृति रक्षा के लिए आज धर्म का जो सही स्वरूप है। जो सबके लिए सदा के लिए और पूर्ण है भाषा, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर है, सनातन है। जिसका आधार परमात्मा का ज्ञान वेद है। उस पर ही मानव समाज को अपना विश्वास स्थापित करना होगा। ऐसा करने से ही इस प्रकार के दुष्कर्मों का सशक्त विरोध हो सकता है और सनातन धर्म संगठित हो सकता है। सनातनधर्मी ईश्वर व धार्मिक मान्यताओं धर्म ग्रंथों, पूजा पद्धति में बंटकर कमजोर हो रहा है। इसका लाभ विधर्मी उठा रहे हैं और सनातन धर्म को क्षति पहुंचा रहे हैं। इसलिए एक विचारधारा, एक ईश्वर, एक धर्म, एक पूजा पद्धति, यही उसके निदान का एकमात्र कारण है। आज आवश्यकता है धर्म के नाम पर जो गलत हो रहा है उसे धार्मिकता का चोला न पहनाए अपितु उसे एक साम्प्रदायिक, अमानवीय समझकर ही उसकी भर्त्सना करना चाहिए।

स्वराज शब्द के जनक क्रान्तिकारी स्वामी दयानन्द

स्वराज शब्द सर्वप्रथम राष्ट्र में स्वामी दयानन्द ने उच्चारा था,
भारत भारतियों का है, कहकर विदेशियों का ललकारा था।।

गौरों ने स्वामी जी को बागी फकीर कहकर पुकारा था,
उनके पीछे कठौर दमनकारी गुप्तचर तन्य उतारा था।।

जनजागरण हेतु स्वामीजी ने गुप्त साधु संग बनाया था,
सन् सत्तावन में गौरों के विरूद्ध क्रान्ति का शंख बजाया था।।

सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वाधीनता का अपूर्व जोश बढ़ आया था,
सेना ने भी अंगड़ाई लेकर विद्रोह का बिगुल बजाया था।।

स्वदेशी राजाओं में भी अतिभारी आक्रोश उमड़ आया था,
लक्ष्मीबाई, नाना, तात्या, बहादुर शाह ने भी जौहर दिखाया था।।

स्वामीजी ने गुप्त रह राजाओं को स्वराज संकल्प कराया था,
रोटी और कमल को क्रान्ति का गुप्त चिन्ह बताया था।।

आपसी फूट से स्वराज क्रान्ति ने भारी धोखा खाया था,
पुनः गौरों को भारत से भगाने का दृढ़ व्रत दिलाया था।।

स्वामीजी ने पुनः पुरखों के गौरव का स्मरण कराया था,
अपनी प्राचीन संस्कृति का महत्व वीरों को याद दिलाया था।।

स्वदेश को स्वाधीन कराने की प्रतिज्ञा आर्यों ने ठानी थी,
भारत अपना है, यह ललकार आर्यों की सबने मानी थी।।

स्वामीजी ने स्वराज स्वदेशी व स्वाभिमान का मूल्य समझाया था,
पूरा राष्ट्र उत्साहित हो स्वराज हेतु बलि होने बढ़ आया था।।

राष्ट्र में पुनः स्वाधीनता हेतु क्रान्ति की आग जगाई थी,
आर्यों ने विदेशी गौरों के विरूद्ध ठानी पुनः लड़ाई थी।।

पिच्यासी प्रतिशत आर्यों ने अंग्रेजी कारागृह का कष्ट उठाया था,
राष्ट्रभक्ति के वशीभूत हो बलि होने का कदम बढ़ाया था।।

वीर अमर शहीदों ने विदेशियों का जीना दूभर बनाया था,
उनका बोरिया बिस्तर अर्द्धरात्रि को जहाज में गोल कराया था।।

सन् सैंतालिस में वीरो ने स्वराज विजय शंख बजाया था,
भारतीयों ने मुक्त गगन में राष्ट्रध्वज तिरंगा फहराया था।।

– **अम्बालाल विश्वकमार्य**
बरखेड़ा पंथ, मन्दसौर

सनातन धर्म में यज्ञ का कितना महत्व

मानव स्वभाव है कभी–कभी वह महत्वपूर्ण बातों से दूर रह जाता है, उन्हें जीवन में बहुत अधिक महत्व नहीं दे पाता है और बहुत बड़े लाभ से वंचित रह जाता है॥ इसके दो कारण हो सकते हैं पहला है ज्ञान का अभाव दूसरा है आलस्य, प्रसाद, अकर्मण्यता॥ यज्ञ के संबंध में सनातन धर्मी दोनों ही स्थिति में पाये जाते हैं॥ कुछ तो यज्ञ के महत्व को उसके लाभों को समझ ही नहीं पाए इसलिए उससे जुड़ नहीं पाए॥ दूसरे वे हैं जिन्हें यज्ञ के स्थान पर कोई छोटे से कर्म से वैकल्पिक व्यवस्था समझ में आ गई॥

इसलिए, यज्ञ के लिए समय, सामग्री परिश्रम के स्थान पर दिया, मोमबत्ती, अगरबत्ती से काम चलाने लगे॥ इतना ही नहीं पहले घी का दिया जलाते थे फिर तेल का हो गया, फिर मोमबत्ती आ गई और अब तो इलेक्ट्रॉनिक दिया और अगरबत्ती आ गई॥ बिजली का स्विच ऑन किया कि दोनों जलने लगेगें॥ न रूई की बाती की आवश्यकता, ना तेल की, ना दिए की॥

यह यज्ञ के स्थान पर हो रहा है जिसको हम मात्र औपचारिकता ही कह सकते हैं॥

सनातन संस्कृति में यज्ञ का बहुत महत्व दर्शाया गया है, याज्ञिक जीवन को ही श्रेष्ठ, सुख, शान्ति, समृद्धि, यश कीर्ति का आधार माना है॥

इसलिए यज्ञ के महत्व को समझकर उसे जीवन का अवश्य पालनीय कर्तव्य, मानना मानव मात्र के कल्याण का अंग है॥ आईए, यज्ञ के संबंध में आर्ष ग्रंथों, विद्वानों एवं ईश्वरीय ज्ञान वेद में जो बताया है उसको कुछ अंशों में बताने का प्रयास यहाँ किया जा रहा है॥

धर्म को मानना है तो यज्ञ करें॥

धर्म के तीन स्तम्भ बताए गए हैं– **"यज्ञो ध्यायनं दानमिती"**

अर्थात् यज्ञ, अध्ययन और दान ये धर्म के आधार हैं, तीनों में यज्ञ को प्रथम स्थान पर रखा है॥

ऐसा क्यों कहा गया, इसे समझना आवश्यक है॥ पहले तो यज्ञ का अर्थ समझ लेना चाहिए॥ उन सभी श्रेष्ठ, पवित्र, परोपकार कार्यों को जो दूसरों के सुख, समृद्धि, सहायता प्रदान करने की मूल भावनाओं से किए जाते हैं वे सब कार्य याज्ञिक (यज्ञ) कर्म हैं॥

धर्म का उद्देश्य सबका विकास, सबको सुखी करना है इसीलिए सन्त तुलसी ने लिखा **"परहित सरस धरम नहि भाई"** जो कार्य से अपने अतिरिक्त दूसरों का भला हो, दूसरों को भी लाभ पहुंचे, ऐसा कर्म धरम कहलाता है॥

यज्ञ ऐसा ही कर्म है न चाहते हुए भी अनजान व्यक्तियों, प्राणियों, वनस्पतियों, को इसका लाभ यज्ञ करने वाला पहुंचाता है।

यज्ञ में उपयोग किया गया घृत, सुगंधित पदार्थ एवं अनेक जड़ी–बूटियों से युक्त हवन सामग्री, प्राकृतिक दुग्ध युक्त आम, बड़, पीपल, खाकरा आदि की समिधा (लकड़ी) जब अग्नि के सम्पर्क में आती है उससे जो धूम उत्पन्न होता है वह चारों ओर फैलता है।

यज्ञ धूम से पर्यावरण की शुद्धि होती, सुख शान्ति का वातावरण निर्मित होता है। यज्ञ करने वाला अपनी सुख शान्ति के साथ–साथ दूसरों की सुख शान्ति की प्रार्थना करता है। व्यक्ति अपना समय, अपना पैसा, अपनी शक्ति यज्ञ करने में लगाता है और आहुती देते समय इदन्नमम् अर्थात मेरा नहीं है, कहता है। क्या मेरा नहीं है ? यज्ञ से जो लाभ होने वाला है उस पर उसका ही (यज्ञ करने वाले का) अधिकार नहीं है, सबके लिए है। यह पवित्र परोपकार, सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से यज्ञ किया जाता है।

सम्मेलन के सम्बंध में

प्रांतीय सम्मेलन का सफल और अभूत पूर्व आयोजन सम्पन्न महू में प्रांतीय सम्मेलन करने का सभा के द्वारा लिया गया निर्णय बहुत सही रहा, जो भी कार्यक्रम आयोजित किये गये वे संगठन की दृष्टि से बहुत ही सफल रहे। आर्यजनों की उपस्थिति बहुत ही संतोषप्रद थी। इसके अतिरिक्त अन्य लोगों की भी उपस्थिति रही। उन्होंने भी आर्य समाज को समझा। इस प्रकार यह कार्यक्रम आर्य समाज व अन्य सनातन धर्मियों के लिए लाभदायक रहा। इससे एक मार्गदर्शन व नव चेतना कार्यकर्ताओं के बीच आयेगी ऐसा विश्वास है।

गोविन्दराम आर्य उप प्रधान इंदौर संभाग

प्रांतीय सम्मेलन सफल रहा और बड़ी बात यह है कि इतनी ठण्ड होने के बाद आर्यों ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दिखाई, कार्यक्रम सफल बनाया। मेरा सुझाव है कि ऐसा कार्यक्रम प्रांत में होते रहना चाहिए। गायत्री महायज्ञ जैसा कार्यक्रम जो कि महू की विशेषता रही है उसका भी आनन्द आर्यजनों ने लिया। दोनों ही कार्यक्रम सफल रहे।

मानसिंह आर्य उप प्रधान चंबल संभाग

चाल धर्म नैया की

नहीं समझ में आता भैया, कैसी चल रही धर्म की नैया।
कोई पूजे कृष्ण कन्हैया, कोई पूजे काली मैया।।
सबकी पूजा करवाने को, हैं पण्डित जी तैयार।
धर्म के ठेकेदार बने है, पर सुधार को नहीं तैयार।।
धरम करम सब भूले बैठे, बस याद रहा व्यापार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार।।

गीत बना लिये हैं मनमाने, जिसका अर्थ वे खुद नहीं जानें।
रोज गा गा करके रात दिन, जिनका करें बखान।।
देव समान महापुरूषों का, जिससे होता भारी अपमान।
जननांगों को पूज रहीं हैं, बिना लिये लाज और संज्ञान।।
सुनने वाले भी सुर ही मिलाते, नहीं समझने को तैयार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार।।

गंजेड़ी भंगेड़ी शिव को बताते, गणपति को आधा लड्डू चोर।
रास रचैया राधा का रसिया, कहते कन्हैया को माखन चोर।।
ये तो है अपमान ही उनका, हम जिनका मचा रहे शोर।
कहते सुनते तो रोज ही रहते, करते कभी नहीं गौर।।
शुद्ध बुद्धि से चिन्तन करने में, लगाओ मिनट दो चार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार।।

भुला रहे हैं श्रेष्ठता उनकी, करते फिर रहे है बदनाम।
ऐसा करने को भी बोल रहे, है ये ही धरम का काम।।
अपने पूर्वजों और माननियों को, हम ही बक रहे गाली।
क्या शब्दों के अर्थ न जानें ? या अकल से हो गये खाली।।
इनको प्यार करो और मान बढ़ाओ, श्रेष्ठ करो व्यवहार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार।।

सत्य सनातन धर्म की बातें, सही बताना जरूरी है।
अपनी अगली पीढ़ी को, संभलना तो मजबूरी है।।
शिक्षा प्रणाली में नहीं मिल रहा, इसका कोई ज्ञान।
तो इस विषय में हम क्यों, नहीं दे रहे जरूरी ध्यान।।
बहक रही हमारी नई पीढ़ी अज्ञान के कारण आज।
इसी चिन्ता से सत्य धरम का, प्रचार करता आर्य समाज।।
इसीलिए तो वैदिक धर्म का प्रचार करता आर्य समाज।।

– आर्य पी.एस. यादव, **मण्डीदीप**

आभार

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मेलन ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ॥ मुझे सभा की ओर से संयोजक का दायित्व सौंपा था, सभी का सहयोग मिला, तभी मैं उस कर्तव्य का निर्वाह कर सका॥

कार्यक्रम अत्यन्त सफल, प्रेरणास्पद और संगठन की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ॥ महू व आसपास के कार्यकर्ताओं का इसमें विशेष सहयोग रहा॥ भव्य व आकर्षक यज्ञशाला, सुसज्जित मंच और पाण्डाल, साहित्य की अनेक दुकानें, टी. वी. चैनल का सिनेमा हॉल यह सब पूरे कार्यक्रम स्थल को एक मेले (जातरा) का रूप दे रहा था॥

कार्यक्रम में युवा सम्मेलन और महिला जागृति सम्मेलन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी रहा॥

समय–समय पर सैद्धान्तिक, संगठन व ऐतिहासिक चर्चा से एक नवचेतना का वातावरण बना॥ इससे प्रान्त से बड़ी संख्या में आये आर्यजनों तक एक अच्छा सन्देश पहुंचा॥

मैं सभी उन सहयोगियों का जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सम्मेलन में सहयोगी रहे उनका मैं आभार व्यक्त करता हूँ॥ **धन्यवाद**

भवदीय :

दलवीरसिंह राघव

संयोजक

प्रान्तीय सम्मेलन

आभार

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मेलन ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम अत्यन्त सफल, प्रेरणास्पद और संगठन की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। महू शहर व आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के कार्यकर्ताओं का इसमें विशेष सहयोग रहा। भव्य व आकर्षक यज्ञशाला, सुसज्जित मंच और पाण्डाल, साहित्य की अनेक दुकानें, टी. वी. चैनल का सिनेमा हॉल यह सब पूरे कार्यक्रम स्थल को एक मेले (जातरा) का रूप दे रहा था।

कार्यक्रम में वेदकथा, व्याख्यानमाला, युवा सम्मेलन, महिला जागृति सम्मेलन एवं लघु नाटिका अत्यन्त प्रेरणादायी रहा।

समय–समय पर सैद्धान्तिक, संगठन व ऐतिहासिक चर्चा से एक नवचेतना का वातावरण बना।

आयोजन की इस सफलता हेतु सभा के समस्त अधिकारी व सदस्यों का बड़ा परिश्रम रहा है। ऐसे कार्यक्रम ही हमारे संगठन को और जन सामान्य को शक्ति व मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

सभा के सभी सहयोगी कार्यरत सदस्यों का भी बहुत सहयोग रहा। कार्यालय मंत्री शरद यादव, सुरेश जी शास्त्री, प्रकाश चौधरी, आशीष उपाध्याय, सुरेश आर्य आशीष मण्डलोई इनका भी अथक प्रयत्न इसकी सफलता में रहा।

अन्त में मैं सभी आर्यजनों को इस सफल कार्यक्रम के लिए बधाई देता हूं।

भवदीय :

इन्द्रप्रकाश गॉधी

प्रधान

म. भा. आ. प्र. सभा

आभार

सम्माननीय आर्यजन,

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मलन परमात्मा की कृपा और आप सबके सहयोग से पूर्ण हुआ। इस अवसर पर अनेक व्यक्ति अन्यान्य कारणों से सम्मिलित नहीं हो सकें, किन्तु फिर भी प्रान्त की समाजों से बड़ी संख्या में आर्यजनों की उपस्थिति रही।

सम्मेलन के प्रारंभ से ही सबका सहयोग, मार्गदर्शन देते हुए तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम संयोजक श्री दलवीरसिंहजी राघव, सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश जी गॉधी ने कार्य करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की व समय – समय पर परामर्श देते रहे। सभी संभागीय उपप्रधान, उपमन्त्री, जिला व तहसील प्रभारी पूर्ण सक्रियता से इसकी सफलता में जुटे। भोपाल से सर्वाधिक सहयोग इस हेतु प्राप्त हुआ। अपने आप में यह एक विशेषता रही कि जितनी राशि सभा द्वारा कार्यक्रम हेतु निश्चित की थी लगभग उतनी राशि को समाजों द्वारा सभा कोष में जमा करा दिया गया। आर्य समाज टी.टी नगर द्वारा एक लाख, पिपलानी, महावीर नगर और शिवपुरी द्वारा पचास–पचास हजार की घोषणा ने एक उत्साह का वातावरण निर्मित कर दिया और इसी क्रम को पूरे प्रान्त न आगे बढ़ाया। यह सब हम सबको एक संबल प्रदान करता है।

कार्यक्रम में उपस्थिति 1200 से अधिक सदस्यों की रही। कार्यक्रम में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर अधिक बल देने की प्रारंभ से ही योजना थी, उन पर विशेष ध्यान दिया गया। आर्य समाज के संगठन की आवश्यकता, उसके विस्तार के लिये योजना, उस पर चर्चा, युवकों, महिलाओं को संगठन से जोड़ने हेतु युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन का आयोजन अत्यन्त प्रभावी रहा। उपस्थित श्रोताओं ने सभी सम्मेलनों व गोष्ठियों में बहुत ही रूची लेकर गंभीरता से भाग लिया।

कवि सम्मेलन में आगन्तुक कवियों ने समाज, संस्कृति और राष्ट्र से संबंधित कविताओं से पूरा वातावरण वैदिक विचारधारा से सराबोर कर दिया। प्रत्येक कवि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य समाज अथवा वैदिक संस्कृति के संबंध में कुछ अवश्य ही कहता। ऐसा प्रतीत होता था जैसे सभी कवि आर्य समाजी ही हैं। सम्मेलन में एक अच्छी परम्परा का निर्वाह हुआ, हमारे वरिष्ठ आर्यजनों को सम्मानित किया गया। सम्मेलन में आर्यजनों के अतिरिक्त कुछ पौराणिक श्रोता भी उपस्थित होते रहे। वैदिक विचारधारा और आर्य समाज के मन्तव्यों को यज्ञ पद्धति को हजारों व्यक्तियों ने सुना और सराहा। इस प्रकार यह सम्मेलन बहुत कुछ अर्थों में सफल रहा। इस सफलता का श्रेय सभा के समस्त पदाधिकारी, संयोजक, सभाप्रधान एवं सभी आर्यजनों को जाता है।

मैं हृदय से सबका आभार व्यक्त करता हूँ तथा ऐसा आग्रह करता हूँ कि भविष्य में भी हम सब इसी प्रकार मिलकर वैदिक धर्म के कार्य में सहयोगी बनें। **इत्योम्**

भवदीय :

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री–म. भा. आ. प्र. सभा

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

ओ३म् ध्वजारोहण करते हुए
सभाप्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय सम्मेलन महू में **दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017** को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में बड़ी संख्या में प्रान्त की लगभग सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं सभा के पदाधिकारी 850 सम्मिलित हुए। विशेषता यह रही कि आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त सैकड़ों श्रोता भी सम्मिलित होते रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ यज्ञ से किया गया, 80 से अधिक यजमानों ने यज्ञ किया, तत्पश्चात ओ३म् ध्वजारोहण किया गया, ध्वजारोहण सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी जी द्वारा किया गया।

मुख्य मंच पर सभाप्रधान श्री गान्धी जी, कार्यक्रम संयोजक श्री दलवीरसिंह राघव, डॉ. धर्मपालजी शर्मा, श्री अतुल वर्मा, श्री राजेन्द्र जी व्यास, प्रकाश आर्य आदि उपस्थित थे। संचालन श्री श्रीधर गोस्वामी एवं श्री दक्षदेव गौड़ कर रहे थे। अतिथि स्वागत व परिचय के पश्चात सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा आर्य समाज की वर्तमान स्थिति और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला गया। श्री डॉ. धर्मपालजी शर्मा उपायुक्त वाणिज्यिक कर विभाग मध्य प्रदेश शासन द्वारा लिखी पुस्तक **"भारतीय पुर्नजागरण और आर्य समाज की भूमिका"** का विमोचन किया गया। इस अवसर पर श्री धर्मपाल शर्मा के पिता डॉ. देवकरणजी शर्मा ने आर्य समाज के बारे में समाज की उन्नति के बारे में अपने विचार रखे। प्रथम सत्र का समापन श्री अतुल वर्मा द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

प्रथम सत्र – 29.12.17

डॉ. धर्मपालजी शर्मा की पुस्तक का विमोचन करते हुए।

द्वितीय सत्र – 29.12.17

श्री विनय आर्य का स्वागत करते हुए, युवा सम्मेलन सदस्य दरबारसिंह, समीर गॉधी, ऋषि आर्य, अतुल वर्मा

युवा सम्मेलन

सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा युवा सम्मेलन पर प्रकाश डालते हुए उसकी आवश्यकता का महत्व बताया। उसके पश्चात कार्यक्रम संयोजक समिति के समीर गॉधी ने अपने जोशीले उद्‌बोधन में कहा – आज युवा पीढ़ी के सामने चुनौती है उस चुनौती को स्वीकारते हुए हमें व्यक्तित्व विकास, समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिए सदैव उद्धत रहना चाहिए। आज समाज में आ रही गिरावट को युवा पीढ़ी ही उसमें अपनी भागीदारी निभाकर समाज व राष्ट्र को उन्नति में योगदान दे सकती है। महर्षि दयानन्द ही आदर्श क्यों, विषय पर गंभीर व महत्वपूर्ण उद्‌बोधन देते हुए महर्षि की विशेषता और जीवन संबंधी अनेक बातों का उल्लेख कर बड़े प्रभावी ढंग से संबोधन किया। उपस्थित जन समुदाय में कई बार तालियों से समर्थन कर सराहा।

ऋषि तिवारी आर्य एडवोकेट– इस अवसर पर संयोजक समिति सदस्य युवा एडवोकेट ऋषि तिवारी आर्य ने कहा आर्य समाज, आर्य समाज के कार्य और मान्यता पर अपने विचार बड़े स्पष्ट और सधे हुए शब्दों में कहे। अपने उद्‌बोधन में कहा आध्यात्मिक उन्नति के साथ सेवा प्रकल्प भी आर्य समाज के साथ जोड़ना चाहिए। आर्य समाज के गुरूकुल के माध्यम से शिक्षा के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास, समाज व राष्ट्र की उन्नति में युवाओं को तैयार किया जाता है, उन्हें संस्कारित किया जाता है। आर्य समाज अन्धविश्वास व भ्रान्तियों को, कुरीतियों को दूर करता है। आज की युवा पीढ़ी में स्वयं को राष्ट्र निर्माण में लगाना होगा। एक प्रभावी व सूझबूझ के साथ दिए गए अपने उद्‌बोधन ने प्रत्येक श्रोता के मन को छू लिया।

काव्यपाठ – ओज पूर्ण रचना का पाठ नवयुवकों को दिशादर्शन करते हुए श्री काशीरामजी अनल व श्री राजेन्द्र जी व्यास ने किया।

डॉ. अन्नपूर्णाजी – युवा वह है जो सदाचारी हो, यह धरती हमारी माँ, जिस प्रकार वृक्ष को हराभरा देखना चाहते हैं तो वृक्ष के पत्तों में नहीं वृक्ष की जड़ों में पानी डालना होगा। उसी प्रकार राष्ट्र को अच्छा बनाना चाहते हैं तो बच्चों में अच्छे संस्कार डालना चाहिए।

आज युवा वग दुर्व्यसनों में भरा पड़ा है उसे इससे बचाना होगा। माता–पिता व आचार्यों द्वारा बच्चों के जीवन निर्माण के लिए संस्कार देकर ही देश को बचाया जा सकता है। युवकों में संस्कृति की रक्षा करने के लिए उनमें राष्ट्रीय भावना भरना ही युवा सम्मेलन का कर्तव्य है।

श्री विनयजी आर्य (मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली)– कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में श्री विनय आर्य का सारगर्भित उद्‌बोधन हुआ। आपने आर्य समाज और युवाओं के बीच जो संबंध है वह आयु से संबंध नहीं रखता। जो व्यक्ति, जो चिन्तक विचार अपने आपको, समाज को बदलने की इच्छा रखता है। वही युवा है। जो अपने सुविचारों से समाज में अच्छा सन्देश दे। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने 18 वर्ष की आयु में युवावस्था प्रारंभ हुई जो 26 वर्ष की आयु में जीवन लीला समाप्त हुई किन्तु इतने कम समय में उन्होंने समाज को बदलने का प्रयास किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने आयु की प्रौढ़ अवस्था में आर्य समाज के माध्यम से समाज को मार्ग बता दिया, जीवन में परिवर्तन का कार्य करता है। दुनिया में सच्चा मित्र है आर्य समाज।

श्री प्रकाश आर्य ने भी युवाओं के लिए अपना प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। विचार टी. वी. के श्री धर्मेश जी ने भी अपना उद्‌बोधन दिया। युवा सम्मेलन का संचालन श्री अतुल वर्मा ने किया।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन – युवा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सुरेशजी आर्य (अध्यक्ष – म. प्र. खादी ग्रामोद्योग) ने की। आपने आर्य समाज और युवा संगठन के महत्व पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। आज देश को आर्य विचारधारा वाले युवकों की आवश्यकता बताते हुए युवाओं को समाज, राष्ट्र व संस्कृति की रक्षा, उन्नति के लिए आगे बढ़ना चाहिए। बड़ी संख्या में उपस्थित युवाओं का यह सत्र बड़ा सफल रहा।

तृतीय सत्र – गीत, भजन, व्याख्यान 29.12.17

रात्रिकालीन सत्र में भजनों की सुन्दर प्रस्तुति दी, सर्वश्री भानुप्रकाश ने जोशीले राष्ट्र भक्ति व ऋषि दयानन्द को सर्वश्रेष्ठ ऋषि बताया। अपने भजनों में उनके द्वारा बताये मार्ग को मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार बताया है। भजनों की श्रृंखला में श्री नीरज शर्मा व दिनेश पथिक के जोशीले एवं जुगलबन्दी के भजनों को सुनकर दर्शक झूम उठे। वहीं संयोजक प्रकाश आर्य के प्रेरणादायी भजनों को खूब सराहा गया।

श्री डॉ. सोमदेव शास्त्री उद्‌बोधन देते हुए
मंच पर सभाप्रधान, कार्यक्रम संयोजक श्री दलबीर सिंह रावत, मन्त्री प्रकाश आर्य

रात्रिकालीन सत्र में उपस्थित श्रोतागण

इसी प्रकार मुम्बई से पधारे डॉ. सोमदेवजी ने रात्रिकालीन व्याख्यानमाला में गायत्री महायज्ञ के विशाल पाण्डाल में जो श्रोताओं से खचाखच भरा था, वैदिक संस्कृति और आर्य समाज विषय पर बोलते हुए कहा – संस्कृति का संबंध हमारी आत्मा से है। मानव की अपनी एक संस्कृति है। वेदों में जो संस्कृति बताई है वह सर्वव्यापक है वह सबके लिए है। कोई व्यक्ति आपका अपमान न करें, तो मैं भी किसी का अपमान न करूं। जब सबमें अपनों को देखना या वह व्यवहार जो हमको पसन्द न हो दूसरों के साथ भी वैसा व्यवहार न करें यह हमारी संस्कृति है।

इससे भी उपर उठकर जब धर्म युद्ध में अर्जुन के हाथ कॉप रहे थे अर्जुन पीछे हट रहा था तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा था हे अर्जुन तुम्हारे अन्दर ये अनार्यत्व कैसे आ गया। तुम अपने पराये में भेद क्यों कर रहे हो, तब कृष्ण ने कहा था युद्ध की घोषणा हो चुकी है। आर्य वह होता है जो अपने व दूसरों के साथ समान व्यवहार करता है यही वैदिक संस्कृति है।

श्री शास्त्री जी ने आगे कहा दैनिक सम्पत्ति का हम दिन रात (सूर्य चन्द्रमा) उपयोग कर रहे हैं हमने कभी उसका बिल नहीं चुकाते है। परमात्मा के इस उपकार के प्रति हमें कृतज्ञ रहना चाहिए यही वैदिक संस्कृति है। जो व्यक्ति प्रातः व सायंकाल संध्या न करे उसके साथ भोजन भी नहीं करना चाहिए, यह वैदिक संस्कृति है। राम और कृष्ण भी अपने समय में सुबह–शाम नित्य संध्या करते थे। यह उस परमपिता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना है। जब हम उस परमात्मा के उपकारों के प्रति कृतघ्न हो जाते हैं तब परेशानी में पड़ जाते हैं। संध्या करना आत्मा का धर्म है। नहाना शरीर का धर्म है। ईश्वर अपने आप में पूर्ण है उसे कुछ देने की आवश्यकता नहीं है। यदि हम संध्या कर रहे हें तो अपने लिए कर रहे हैं। जिस प्रकार शरीर गन्दा होता है तो नहाते हैं, मकान गन्दा होता है तो उसे साफ करना आपका धर्म है। उसी प्रकार दैनिक सन्ध्या हवन करना आत्मा की सफाई का कार्य है। यह नित्य कर्म है। दैनिक अग्निहोत्र भी दैनिक कार्य का हिस्सा है।

आपने आगे बताया हवन कुण्ड का स्थान सिर से भी उंचा है। बूढ़े मॉ–बाप की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह वैदिक संस्कृति है। संसार का कोई धर्म इससे इन्कार नहीं कर सकता है। इस धरती पर राम और कृष्ण के समान बलवान, चरित्रवान, वेदों को मानने वाले ईश्वर को मानने वाला दूसरा नहीं है। कृष्ण का चरित्र. ओजस्वी, तेजस्वी रहा है, संस्कृत में शास्त्रों में कहीं भी राधा का नाम नहीं आया है। तथाकथित धर्म के दुश्मनों ने भ्रान्ति उत्पन्न कर दी है। वैदिक संस्कृति के लिए जो बलिदान आर्य समाज ने किया है वह कोई ओर नहीं कर सकता। वैदिक संस्कृति की रक्षा का जिम्मा आर्य समाज का है।

आज जब वैदिक संस्कृति पर चारों ओर से प्रहार किए जा रहे हैं वहॉ आर्य समाज को पहले से भी अधिक जागरूक, संगठित होने की आवश्यकता है। इतिहास है जब–जब सनातन धर्म या हमारे महापुरूषों पर किसी ने कीचड़ उछाला आर्य समाज आगे आया और उसका जवाब दिया। इस राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए बड़ा सहयोग आर्य समाज का है, कई बलिदानी इसके हुए हैं इसलिए इसे अधिक चिन्ता है।

दिनांक 30/12/2017 प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ के पश्चात यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्रजी शास्त्री ने यजमानों को आशीर्वाद दिया एवं सुन्दर भजन की प्रस्तुति दी।

द्वितीय सत्र –

डॉ. राकेश शर्मा महिला सम्मेलन संचालन करते हुए

दोपहर में महिला जागृति सम्मेलन का आयोजन इन विषया **नारी का सनातन संस्कृति में गौरवमयी स्थान, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना में नारी की भूमिका, परिवार, समाज व राष्ट्र निर्माण में नारी जाति का महत्व व योगदान, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज व नारी, अपने गौरवमयी स्थान को यथावत रखने के लिए सावधानी, महर्षि दयानन्द और महिला समाज, नारी मानव समाज की सशक्त धुरी** पर किया गया जिसमें मुख्य अतिथि – श्रीमती सुषमा जी चौधरी (प्रतिभा सिन्थेटिक्स), विशेष अतिथि – श्रीमती सुमनजी ज्ञानी।

सर्वप्रथम श्रीमती बिन्दू पंचोली ने महिला गौरव पर स्वरचित कविता पाठ किया। सुश्री निधि शर्मा और सौ. सविता शर्मा ने सुन्दर ओजस्वी भजन की प्रस्तुति की। श्रीमती सरिता आर्य ने भी बड़ी जोशिली कविता का पाठ, भावों की अभिव्यक्ति के साथ किया।

कार्यक्रम में अलग–अलग विषयों पर वक्ता – अध्यक्षता डॉ. अन्नपूर्णाजी, डॉ. गायत्री जी, दिल्ली, श्रीमती गीता आर्य–महू, डॉ. ऊषाकिरण त्रिपाठी ने अपने सारगर्भित, प्रेरणास्पद विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम संयोजिका डॉ. राकेश शर्मा, सुश्री निधि शर्मा, श्रीमती सरिता आर्य। बड़ी संख्या में उपस्थित महिला व पुरूषों ने कार्यक्रम को बहुत सराहा और अभूतपूर्व कहा।

विद्यार्थियों द्वारा हैरत अंगेज प्रदर्शन

महिला सम्मेलन के पश्चात आर्य शिक्षण संस्थान, महू एव पं. राजगुरू शर्मा वैदिक छात्रावास के बालक–बालिकाओं द्वारा योग प्रदर्शन किया गया जिसे, खूब सराहा गया और बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु अतिथियों द्वारा हजारों रूपयों का पारितोषिक भी प्रदान किया गया।

सायंकालीन सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

शनिवार रात्रि एक विराट अखिल भारतीय कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

जिसमें उज्जैन से पधारे कवि श्री राजेन्द्र व्यास जी की अध्यक्षता में श्री प्रकाश आर्य–महू, नरेन्द्र अटल–महेश्वर, अनिल अंगार–इन्दौर, चेतना शर्मा–आगरा, सतीश सागर–उज्जैन, रूपसिंह हाण्डा–पिथमपुर, पंकज पसून–माण्डव, काशीराम अनल–कानड़ व द्रोणाचार्य दुबे–कोदरिया ने देर रात तक काव्यपाठ किया।

प्रत्येक कवि ने समाज, राष्ट्र और आर्य समाज, महर्षि दयानन्द पर रचित काव्यपाठ किया। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे सभी कवि आर्य समाजी ही हैं।

प्रारंभ में श्री दक्षदेव गौड़, राधेश्याम बियाणी व आर्य रामलाल प्रजापति ने सभी कवियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया।

देर रात तक चले इस कवि सम्मेलन में सभी कवियों ने महर्षि देव दयानन्द के जीवन व राष्ट्रीय चेतना में आर्य समाज का समाज व राष्ट्रोत्थान में योगदान के ईर्द गिर्द अपनी रचनाएँ पड़ी।

कवि सम्मेलन का गरिमामय संचालन श्री नरेन्द्र अटल ने किया व आभार प्रान्तीय सभा के श्री अतुल वर्मा ने माना।

इस अवसर पर महू नगर एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के श्रोताओं के अलावा गायत्री महायज्ञ एवं प्रान्तीय महासम्मेलन में पधारें आर्य समाज के प्रतिनिधियों से पाण्डाल खचाखच भरा था।

कार्यक्रमों में प्रतिदिन हजारों धर्मप्रेमी सज्जनों की उपस्थिति इस बात की गवाही है कि नगर में इससे अच्छा ज्ञान, परमार्थ एवं आध्यात्म का दूसरा कार्यक्रम नहीं हो सकता।

वरिष्ठ आर्यजनों का सम्मान

पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य मंच से प्रान्तीय सम्मेलन के तहत आर्य समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ताओं का प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी, संयोजक श्री दलवीर सिंह जी राघव, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री अतुल वर्मा आदि ने शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र देकर सम्मान किया। जिसमें सर्वश्री राजेन्द्र व्यास, काशीराम अनल, परमाल सिंह कुशवाह, शिव सिंह आर्य, रमेशचन्द्र गोयल, बंशीलाल शर्मा, बाबूलाल जोशी, नरेन्द्र आर्य, श्रीमती उर्मिला गॉधी आदि।

हमारे अन्य सम्माननीय श्रेष्ठी जिनका सम्मान करने का निर्णय सभा द्वारा लिया गया है उनमें श्री सीताराम जी आर्य विदिशा, श्री कृपाशंकर जी शर्मा मंदसौर, श्री जयप्रकाश जी वर्मा भोपाल, श्री सुभाष मनचंदा जी भोपाल, श्री राजेन्द्र बाबू जी रतलाम के नाम भी है। प्रांतीय सम्मेलन में सम्मान के समय आप अन्यान्य कारणों से उपस्थित न हो सके। उनका सम्मान उचित समय पर किया जाना शेष है।

श्री राजेन्द्र जी व्यास

श्री शिव सिंह जी

श्री रमेशचन्द्र जी गोयल

श्री काशीराम जी अनल

श्री बंशीलाल जी शर्मा

श्री अर्जुन जी चड्डा

श्री नरेन्द्र जी आर्य

श्रीमती उर्मिला जी गांधी

श्री परमाल सिंह जी कुशवाह

श्री बाबूलाल जी जोशी

श्री सुरेश आर्य को स्मृति चिन्ह भेंट

उपस्थित आर्यजन

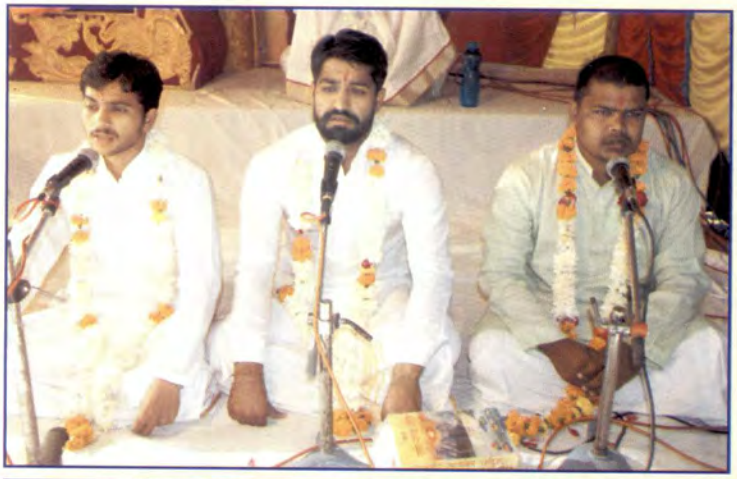

प्रतिदिन प्रातः यज्ञ एवं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र जी शास्त्री ने यज्ञ के महत्व को समझाते हुए यज्ञ की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, पूर्णाहुति में हजारों लोगों ने भाग लिया।

समस्त आर्यजनों का आभार जिन्होंने प्रांतीय सम्मेलन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया और अपनी उपस्थिति दर्शायी, उन सबके प्रति बहुत बहुत आभार।

अतुल वर्मा कोषाध्यक्ष

भव्य आर्कषक पाण्डाल एवं श्रद्धालुजन

द्वितीय सत्र में शासन को संस्कृत कक्षा 10 वीं से पुनः लागू करना, गौवंश वध रोकने के लिए प्रस्ताव पारित किए गये। प्रान्तीय आर्य सम्मेलन में तीसरे सत्र में आर्य समाजों के उत्थान व समाज व राष्ट्रोत्थान में उनके योगदान में आने वाली कमियों एवं कार्यक्रमों को रचनात्मक रूप देकर संस्कृति की रक्षा में आर्य समाज की भूमिका पर प्रान्तीय सभा के सदस्यों के बीच विचार विमर्श हुआ। सम्मेलनों का संचालन महामन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने किया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में लोग यज्ञवेदी के चक्कर लगाते रहे। हजारों लोग यज्ञ वेदी व विशाल पाण्डाल देखने आये।

महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव 10 फरवरी को धूमधाम से मनावें इस हेतु प्रभात फेरी, यज्ञ, लंगर, साहित्य वितरण, प्रसाद वितरण, महर्षि जीवन पर व्याख्यान का अपनी सुविधानुसार कार्यक्रम बनावें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

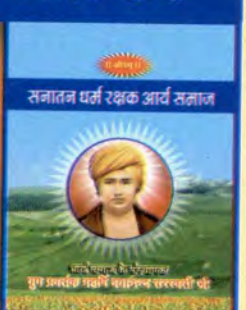

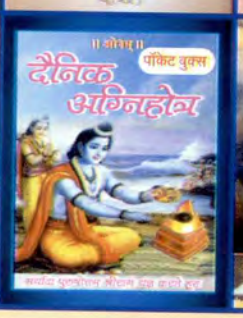

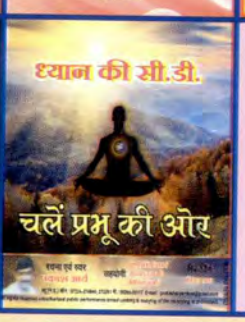

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

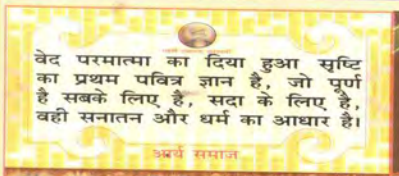

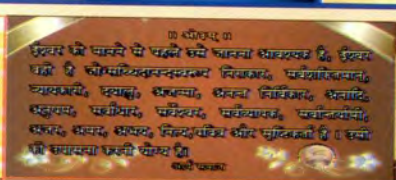

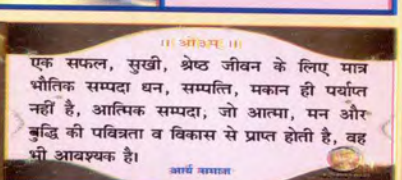

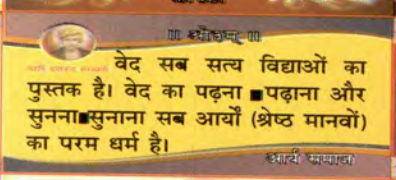

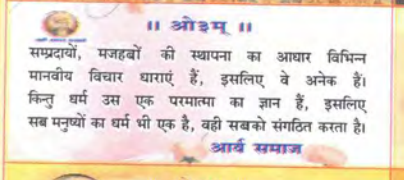

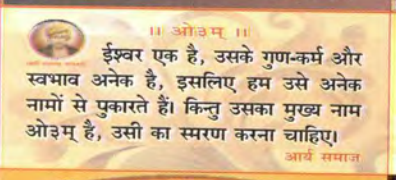

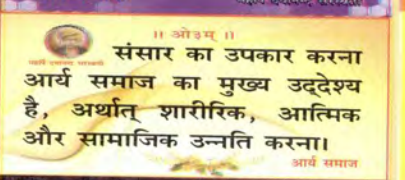

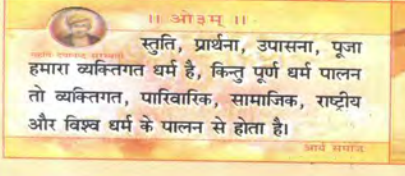

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू